DSSSB PRT, TGT & PGT
Part(A+B)
SCHOLAR BATCH
हिन्दी
प्रमुख कवि और उनकी पंक्तियाँ
Part -3
LIVE
26-07-2024 09:00 AM

जगन्नाथ "रत्नाकर'

(1) नंद औ जसोमति के प्रेम-पगे पालन की, लाड़ भरे लालन की
लालच लगावती।

(2) रूप रस पीवत अघात ना हुते जो तब
सोइ अब आँसू है उबरि गिरिबौं करै ॥

जयशंकर प्रसाद

(आँसू से)

(1) बाँधा था विधु को किसने इन काली जंजीरों से।
मणि वाले फणियों का मुख क्यों भरा हुआ है हीरों से।।

(2) विद्रुम - सीपी - संफुट में मोती के दाने कैसे?
है हंस न, पर शुक फिर क्यों चुगने के मुक्ता ऐसा ।।

(3) झंझा झकोर गर्जन है, बिजली है नीरद माला।
पाकर इस शून्य हृदय को, सबने आ डेरा डाला।।

(4) पतझड़ था, झाड़ खड़े थे सूखे से फुलवारी में।
किसलयदल कुसुम बिछाकर आए तुम इस क्यारी में ।।

(5) इस करुणा कलित हृदय में अब विकल रागिनी बजती। क्यों
हाहाकार स्वरों में वेदना असीम गरजती?

(6) मानव जीवन वेदी पर परिणय हो विरह मिलन का। दुःख सुख
दोनों नाचेंगे है खेल आँख का मन का।।

(7) जल उठा स्नेह दीपक -सा, नवनीत हृदय था मेरा।
अब शेष धूम रेखा से, चित्रित कर रहा अँधेरा ।।

(8) तेरे प्रकाश में चेतन संसार वेदना वाला।
मेरे समीप होता है पाकर कुछ करुण उजाला।।

(9) सबका निचोड़ लेकर तुम सुख से सूखे जीवन में।
बरसो प्रभात हिमकन-सा आँसू इस विश्व सदन में।

'कामायनी' से

(1) ओ चिन्ता की पहली रेखा, अरी विश्व वन की व्याली,
ज्वालामुखी विस्फोट के भीषण प्रथम कम्प-सी मतवाली ।।

(2) बुद्धि, मनीषा, मति, आशा, चिन्ता तेरे हैं कितने नाम।
अरी पाप है तू, जा चल जा यहाँ नहीं कुछ तेरा काम।

(3) सिन्धु सेज पर धरा वधू अब तनिक संकुचित बैठी-सी,
प्रलय निशा की हलचल स्मृति में मान किए सी ऐंठी-सी ।।

(4) संवेदन का और हृदय का यह संघर्ष न हो सकता,
फिर अभाव असफलताओं की गाथा कौन कहाँ बकता।

(5) फटा हुआ था नील वसन क्या ओ यौवन की मतवाली। देख
अंकिचन जगत लूटता तेरी छवि भोली भाली॥

(6) हृदय की अनुकृति बाह्य उदार एक लम्बी काया उनमुक्त।
मंधु - पवन - क्रीड़ित ज्यों शिशु साल, सुशोभित हो सौरभ
संयुक्त ॥

(7) नील परिधान बीच सुकुमार खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।

(8) नित्य - यौवन छवि से ही दीप्त विश्व की करुण कामना मूर्ति ।
खिला हो ज्यों बिजली का फूल मेघवन बीच गुलाबी रंग ।।
स्पर्श के आकर्षण से पूर्ण प्रकट करती ज्यों जड़ में स्फूर्ति ।।

'लहर' से

(1) उठ उठ, गिर गिर, फिर फिर आती,
नर्तित पदचिह्न बना जाती; सिकता की रेखाएँ उभार,
भर जाती अपनी तरल सिहर ।

(2) तुम हो कौन और मैं क्या? इसमें क्या है धरा सुनो।
मानस जलधि रहे चिर चुंबित मेरे क्षितिज ! उदार बनो।

(3) ले चल वहाँ भुलावा देकर मेरे नाविक ! धीरे-धीरे ।
जिस निर्जन में सागर लहरी अम्बर के कानों में गहरी
निश्छल प्रेम कथा कहती हो तज कोलाहल की अवनी रे ॥

(4) श्रम विश्राम क्षितिज बेला से, जहाँ सृजन करते मेला से- अमर
जागरण, उषा नयन से-बिखराती हो ज्योति घनी रे ॥

(5) बीती विभावरी जाग री!

अम्बर पनघट में डुबो रही तारा घट उषा नागरी।
खगकुल 'कुल कुल' सा बोल रहा, किसलय का अंचल डोल रहा।
लो, यह लतिका भी भर लाई, मधु मुकुल नवल रस गागरी ।।

(6) मेरा अनुराग फैलने दो, नभ के अभिनव कलरव में,
जाकर सूनेपन के तम में, बन किरण कभी आ जाना।

(7) जग की सजल कालिमा रजनी में मुखचन्द्र दिखा जाओ; प्रेम
वेणु की स्वर लहरी में जीवन गीत सुना जाओ।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ('राम की शक्ति पूजा' से)

(1) ऐसे क्षण अन्धकार घन में जैसे विद्युत ।
जागी पृथ्वी - तनया - कुमारिका - छवि, अच्युत ॥

(2) है अमा-निशा; उगलता गगन घन अन्धकार,
खो रहा दिशा का ज्ञान; स्तब्ध है पवन चार ।

(3) लख शंकाकुल हो गये अतुल - वल शेष - शयन,
खिंच गये दृगों में सीता के राममय नयन ।

(4) काँपते हुए किसलय - झरते पराग समुदाय,

गाते खग नव जीवन परिचय, तरु मलय वलय,

ज्योति प्रपात स्वर्गीय, ज्ञातं छवि प्रथम स्वीय,

जानकी-नयन-कमनीय प्रथम कम्पन तुरीय।

(5) धिक् जीवन जो पाता ही आया है विरोध

धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।

(6) अन्याय जिधर, हैं उधर शक्ति। कहते छल-छल।

हो गए नयन, कुछ बूँद पुनः ढलके दृगजल ।।

(7) शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन,

छोड़ दो समर जब तक न सिद्धिं हो, रघुनन्दन !

(8) होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन !

कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।

'सरोज स्मृति' से

(1) अशब्द अधरों का सुना भाष,
मैं कवि हूँ, पाया है प्रकाश।

(2) धन्ये, मैं पिता निरर्थक था, कुछ भी तेरे हित न कर सका।
जाना तो अर्थागमोपाय पर रहा सदा संकुचित काय।
लखकर अनर्थ आर्थिक पथ पर हारता रहा मैं स्वार्थ समर।

(3) यह हिन्दी का स्नेहोपहार, यह नहीं हार मेरी, भास्वर
यह रत्नहार - लोकोत्तर वर।

'तुलसीदास' से – निराला

(1) भारत के नभ का प्रभापूर्य

शीतलच्छाय सांस्कृतिक सूर्य

अस्तमित आज रे - तमस्तूर्य दिंमण्डल

उर के आसन पर शिरस्त्राण

शासन करते हैं मुसलमान;

है ऊर्मिल जल, निश्चलत्प्राण पर शतदल

(2) होगा फिर से दुर्धर्ष समर
जड़ से चेतन का निशिवासर,
कवि का प्रति छवि से जीवन हर, जीवन भर ;
भारती इधर, है उधर सकल
जड़ जीवन के संचित कौशल;
जय, इधर ईश, हैं उधर सबल माया - कर

(3) जागो जागो आया प्रभात, बीती वह बीती अन्ध रात,
झरता भर ज्योतिर्मय प्रपात पूर्वांचल,
बाँधों, बाँधों किरणें चेतन, तेजस्वी, है तमतजिज्जीवन;
आती भारत की ज्योतिर्धन महिमाबल ।

'बादल राग' से (सं. रामविलास शर्मा)

(4) जागो फिर एक बार
शेरों की माँद में आया है आज स्यार

(5) विजन वन वल्लरी पर
सोती थी सुहाग भरी
स्नेह स्पप्न मग्न अमल कोमल तनु तरुणी,
जुही की कली
दृग बन्द किए शिथिल पत्रांक में (जूही की कली)

(6) स्नेह निर्झर बह गया है।
रेत ज्यों तन रह गया है।

(7) यौवन के तीर पर प्रथम था आया जब स्रोत सौन्दर्य का,
वीचियों कलरव सुख चुंबित प्रणय का
था मधुर आकर्षणमय
मज्जनावेद मृदु फूटता सागर में।।

(8) जीर्ण बाहु है शीर्ण शरीर
तुझे बुलाता कृषक अधीर
ए विप्लव के वीर।

महादेवी वर्मा

(1) मैं नीर भरी दुःख की बदली
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली ।।

(2) पर शेष नहीं होगी यह मेरे प्राणों की क्रीड़ा।
तुमको पीड़ा में ढूँढा तुममे ढूँढूँगी पीड़ा ।

(3) जो तुम आ जाते एक बार ।
कितनी करुणा कितने सन्देश पथ में बिछ जाते बन पराग ।
गाता प्राणों का तार-तार अनुराग भरा उन्माद राग ।

(4) क्या पूजा क्या अर्चन रे?

उस असीम का सुन्दर मन्दिर मेरा लघुतम जीवन रे।

सुमित्रानन्दन पन्त

(1) छोड़ द्रुमो की मृदु छाया,
तोड़ प्रकृति से भी माया,
बाले तेरे बाल जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन?

(2) प्रथम रश्मि का आना रंगिणी! तूने कैसे पहचाना? कहाँ-कहाँ हे बाल विहंगिनी ! पाया तूने यह गाना ?

(3) अरुण अधरों की की पल्लव प्रात,
मोतियों सा हिलता हिम हास।

(4) सैकत- शय्या दर दुग्ध धवल, तन्वंगी गंगा, ग्रीष्म, विरल,
लेटी है श्रान्त, क्लान्त निश्चल!
तापस- बाला गंगा निर्मल, शशि- मुख से दीपित मृदु करतल,
लहरे उर पर कोमल कुन्तल !

(5) इस धारा-सा ही जंग का क्रम, शाश्वत इस जीवन का उद्गम,
शाश्वत ही गति, शाश्वत संगम!

(6) तुम्हारे छूने में था प्राण, संग में पावन गंगा स्नान।
तुम्हारी वाणी में कल्याणि त्रिवेणी की लहरों गान।।

(7) धूम धुंआरे काजर कारे हम ही बिकरारे बादर।
मदनराज के वीर बहादुर, पावस के उड़ते फणिधर ।।

(8) धूलि की ढेरी में अनजान छिपे हैं मेरे मधुमय गान।

(9) वियोगी होगा पहला कवि आह से उपजा होगा गान।
निकलकर आँखों से चुपचाप बही होगी कविता अनजान ।।

(10) द्रुत झरों जगत के जीर्ण पत्र, हे स्त्रस्त ध्वस्त हे शुष्क शीर्ण। हिम
ताप पीत मधुवात भीत, तुम वीतराग जड़ पुराचीन।।

(11) लक्ष अलक्षित चरण तुम्हारे चिह्न निरन्तर।
छोड़ रहे हैं जग के विक्षत वक्षस्थल पर।।

(12) दूर उन खेतों के उस पार, जहाँ तक गई नील झंकार।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

(1) ओ भिखमंगे, अरे पराजित, ओ मललूम, आरे चिरदोहित, तू अखण्ड भण्डार शक्ति जाग अरे निद्रा सम्मोहित।

(2) है बलिवेदी, सखे प्रज्ज्वलित माँग रही ईंधन क्षण-क्षण,
आओ युवक, लगा दो तो तुम अपने यौवन को ईंधन ।।

(3) हम अनिकेतन, हम अनिकेतन, हम तो रमते राम हमारा क्या घर, कैसा वतन ?

मुक्तिबोध

(1) हर एक छाती में आत्मा अधीरा है।
प्रत्येक सुस्मित में, विमल सदानीरा है
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में महाकाव्य-पीड़ा है।
'अंधेरे में' से

(2) ओ मेरे आदर्शवादी मन,
ओ मेरे सिद्धान्तवादी मन उदरम्भरि अनात्म बन गये
भूतों की शादी में कनात से तन गये।

(3) बहुत - बहुत ज्यादा लिया,
दिया बहुत - बहुत कम
मर गया देश, अरे, जीवित रह गए तुम !!

(4) अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे
उठाने ही होंगे।
तोड़ने होंगे मठ और गढ़ सभी ।

(5) कविता में कहने की आदत नहीं है, पर कह दूँ
वर्तमान समाज चल नहीं सकता।
पूँजी से जुड़ा हुआ हृदय बदल नहीं सकता।

(6) खोजता हूँ पठार - पहाड़, समुन्दर

जहाँ मिल सके मुझे
मेरी वह खोयी हुई
परम अभिव्यक्ति अनिवार
आत्म-सम्भवा ।

भवानी प्रसाद मिश्र

(1) जी हाँ हजूर, मैं गीत बेचता हूँ,
मैं तरह-तरह के गीत बेचता

(2) टूटने का सुख:
बहुत प्यारे बन्धनों को आज झटका लग रहा है, टूट जाएँगे कि
मुझको आज खटका लग रहा है।

(3) सतपुड़ा के घने जंगल
नींद में डूबे हुए से,
उँघते अनमने जंगल।

(4) फूल लाया हूँ कमल के।
क्या करूँ इनका ?
पसारें आप आँचल,
छोड़ दूँ,
हो जाए जी हल्का।

शमशेर बहादुर सिंह

(1) चूका भी हूँ मैं नहीं
कहाँ किया मैंने प्रेम अभी
जब करूँगा प्रेम पिघल उठेंगे
युगों के भूधर

धर्मवीर भारती

(1) सृजन की थकान भूल जा देवता!
अभी तो पड़ी है धरा अधबनी।

(2) इन फ़ीरोज़ी होठों पर बरबाद
मेरी जिन्दगी।

(3) अगर मैंने किसी के होठ के पाटल कभी चूमे अगर मैंने किसी के नैन के बादल कभी चूमे महज़ इससे किसी का प्यार मुझ पर पाप कैसे हो! महज़ इससे किसी का स्वर्ण मुझ पर शाप कैसे हो।

रघुवीर सहाय

(1) राष्ट्रगीत में भला कौन वह भारत भाग्य विधाता है।
फटा सुथन्ना पहने जिसका गुन हर चरना गाता है।

(2) मैं अपनी एक मूर्ति बनाता हूँ और एक ढहाता हूँ
और आप कहते हैं कि कविता की है।

(3) कितना अच्छा था छायावादी एक दुःख लेकर वह गान देता था
कितना कुशल था प्रगतिवादी
हर दुःख का कारण पहचान लेता था।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

(1) लीक पर वे चलें जिनके
चरण दुर्बल और हारे हैं
हमें तो हमारी यात्रा से बने
ऐसे अनिर्मित पंथ प्यारे हैं।

(2) लोकतन्त्र को जूते की तरह
लाठी मे लटकाए
भागे जा रहे हैं सभी
सीना फुलाए।

(3) मैं नया कवि हूँ-
इसी से जानता हूँ
सत्य की चोट बहुत गहरी होती है।

केदारनाथ सिंह

(1) मैंने जब भी सोचा
मुझे रामचन्द्र शुक्ल की मूँछे याद आई।

(2) मैं पूरी ताकत के साथ
शब्दों को फेंकना चाहता हूँ।

समकालीन कवियों की महत्त्वपूर्ण काव्य पंक्तियाँ

समकालीन कवियों की महत्त्वपूर्ण काव्य पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं-

दुष्यन्त कुमार

(1) कहाँ तो तय था चिरागाँ हरेक घर के लिए,
कहाँ चिराग मयस्मर नहीं शहर के लिए।

(2) हो गई है पीर पर्वत - सी पिघलानी चाहिए
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

(3) मत कहो आकाश में कुहरा घना है,
यह किसी की व्यक्तिगत आलोचना है।

प्रगतिवादी कवियों की महत्त्वपूर्ण काव्य पंक्तियाँ

प्रगतिवादी कवियों की महत्त्वपूर्ण काव्य पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं-

केदारनाथ अग्रवाल

(1) धूप चमकती है चाँदी की साड़ी पहने
मैंके में आई बेटी की तरह मगन है।

(2) एक बीते के बराबर,

यह हरा ठिगना चना

बाँधे मुरैठा शीश पर

छोटे गुलाबी फूल का।

(3) मैंने उसको जब-जब देखा,

लोहा जैसे तपते देखा, गलते देखा, ढलते देखा।

मैंने उसको गोली जैसे चलते देखा ॥

(4) आज का लेखन
आग के अँगूठे की
क्रान्तिकारी कतार का
बन्दूक मार लेखन है।

नागार्जुन

(1) जन-जन में जो ऊर्जा भर दे
मैं उद्गाता हूँ उस रवि का।

(2) याद आता मुझे अपना 'तरउनी' ग्राम
याद आती लीचियाँ औ आम

(3) कई दिनों तक चूल्हा रोया चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उसके पास।

(4) कालिदास, सच-सच बतलाना।
इन्दुमती के मृत्युशोक से
अज रोया या तुम रोये थे ?
कालिदास, सच-सच बतलाना।

(5) घून खाये शहतीरों पर बारह खड़ी विधाता बाँचे।
फटी भीत है, छत चूती है, अले पर बिसतुइया नाचे।

(6) अमल धवल गिरि के शिखरों पर

बादल को घिरते देखा है।

(7) पाँच पूत भारतमाता के दुश्मन था खूँखार।

गोली खाकर एक मर गया बाकी रह गए ॥

त्रिलोचन

(1) मुझे जगत जीवन का प्रेमी
बना रहा है प्यार तुम्हारा।

(2) यों ही कुछ मुसकाकर तुमने
परिचय की वह गाँठ लगा दी
जड़ता है जीवन की पीड़ा
निस्तरंग पाषाणी क्रीड़ा

तुमने अनजाने वह पीड़ा
छवि के सर से दूर भगा दी।

दिनकर

(1) ओ द्विधाग्रस्त शार्दूल बोल।

(2) श्वानों को मिलता दूध-भात बच्चे भूखे अकुलाते हैं।
माँ की हड्डी से ठिठुर चिपक जाड़े की रात बिताते हैं ॥

(3) हटो व्योम के मेघ, पंथ से, स्वर्ग लूटने हम आते हैं,
दूध-दूध ओ वत्स! तुम्हारा दूध खोजने हम आते हैं।

(4) रे! रोक युधिष्ठिर को न यहाँ, जाने दे उनको स्वर्ग धीर।
पर फिरा हमें गांडीव गदा, लौटा दे अर्जुन भीम वीर।।

अज्ञेय

(1) वही परिचित दो आँखें ही चिर माध्यम हैं
सब आँखों से सब दर्दों से मेरे लिए परिचय का।

(2) यह दीप अकेला स्नेह भरा,
है गर्व भरा मदमाता,
पर इसको भी पंक्ति दे दो।

(3) किन्तु हम हैं द्वीप।

हम धारा नहीं हैं।

स्थिर समर्पण है हमारा हम सदा से द्वीप हैं स्त्रोतस्विनी के।

(4) हम निहारते रूप,

काँच के पीछे

हाँफ रही है मछली

(5) साँप! तुम सभ्य तो हुए नहीं नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया।

तब कैसे सीखा डँसना- विष कहाँ पाया ?

(6) भोर का बावरा अहेरी
पहले बिछाता है आलोक की
लाल-लाल कनिया।

(7) मौन भी अभिव्यंजना है
जितना तुम्हारा सच है
उतना ही कहो।

(8) अगर में तुमको
लजाती साँझ के नभ की अकेली तारिका
अब नहीं कहत
ये उपमान मैले हो गये हैं।
देवता इन प्रतीकों के कर गए हैं कूच।

(9) मूत्र सिंचित मृत्तिका के वृत्त में
तीन टाँगों पर खड़ा नतग्रीव
धैर्यधन गदहा।

सुदामा पाण्डे 'धूमिल'

(1) यह जनतन्त्र
जिसकी रोज सैकड़ों बार हत्या होती है
और हर बार वह भेड़ियों की ज़ुबान पर जिन्दा है

(2) अपने यहाँ संसद
तेली की वह घानी है
जिसमें आधा तेल है
आधा पानी है।

(3) भूख से रिरियाती हुई हथेली का नाम दया है
और भूख से तनी हुई मुट्ठी का नाम नक्सलवाडी है ।

(4) हाँ, हाँ, मैं कवि हूँ
कवि - यानी भाषा में भदेस हूँ।

(5) कविता.
भाषा में आदमी होने की तमीज है।

(6) भाषा उस तिकड़मी दरिन्दे की कौर है
जो सड़क पर और है ।

(7) क्रान्ति

यहाँ के असंगत लोगों के लिए
किसी अबोध बच्चे के
हाथों की जूजी है।

(8) एक सही कविता

पहले एक सार्थक वक्तव्य होती है।

(9) कविता

शब्दों की अदालत में
अपराधियों के कटघरे में खड़े
एक निर्दोष आदमी का हलफनामा है।

(10) अब उसे मालूम है कि कविता
घेराव में
किसी बौखलाए हुए आदमी का संक्षिप्त एकालाप है।

हिन्दी ग़ज़ल के चर्चित शेर

अमीर खुसरो

(1) शबाने हिजरां दराज़ यू जुल्फ बरोज़े वसला चू उम्र कोताह,
सखी पिया को जौ मैं न देखूं तो कैसे काटूं अँधेरी रतिया।

जयशंकर प्रसाद

(1) सरासर भूल करते हैं, उन्हें जो प्यार करते हैं,
बुराई कर रहे हैं और अस्वीकार करते हैं।
उन्हें अवकास ही इतना कहाँ है मुझसे मिलने का,
किसी से पूछ लेते हैं यह उपकार करते हैं।

गोपालदास 'नीरज'

(1) समय ने जब अँधेरों से दोस्ती की है
जला के अपना ही घर, हमने रोशनी की है।

(2) बदन पे जिसके शराफत का पैरहन देखा,
वो आदमी भी यहाँ हमने बदचलन देखा ।।

रामदरश मिश्र

(1) बाजार को निकले हैं लोग बेच के घर को ।
क्या हो गया है जाने आज मेरे शहर को ।।

कुँवर बेचैन

(1) अपने मन में ही अचानक यू सजल हो जाएँगे।
क्या खबर थी आपसे मिलकर ग़ज़ल हो जाएँगे ।।

(2) जब तेरी याद ने सीने से लगाया मुझको।
याद आकर भी कोई याद न आया मुझको ।।